Donated by Dr. N. D. Khanna, Ex. Director
डॉ. एन. डी. खन्ना, भूतपूर्व निदेशक द्वारा दान की गई

भाकृअनुप
ICAR

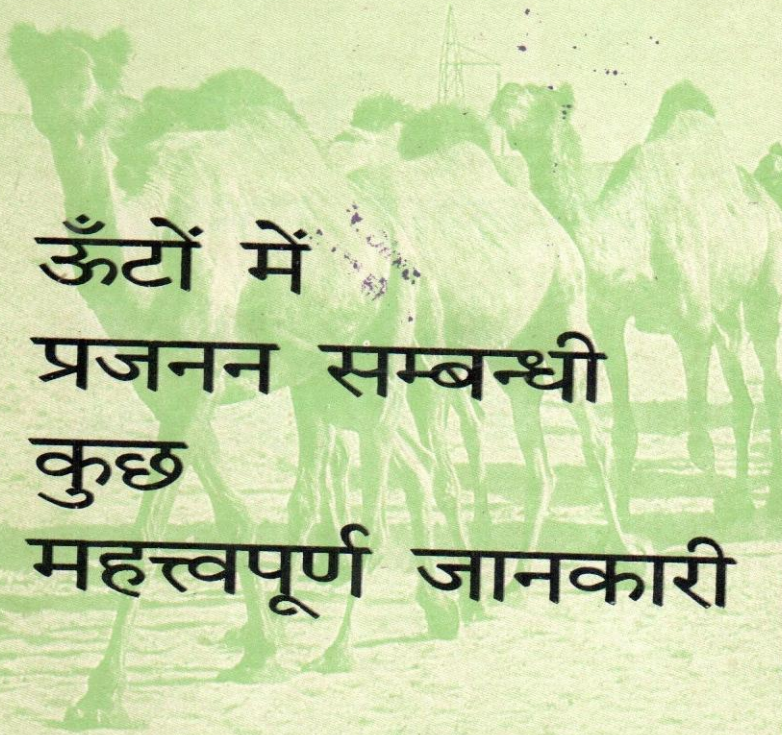

ऊँटों में प्रजनन सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़ शिवबाड़ी
बीकानेर

© राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंसान केन्द्र

प्रकाशक

परियोजना निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी,
बीकानेर 334001

मुद्रक

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् प्रिंटर्स
बिस्सों का चौक
बीकानेर 334001

ऊँटों में प्रजनन सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी

हम यहाँ मरुस्थल का जहाज कहे जाने वाले उस पशु के बारे में कह रहे हैं जो कि पशु-वर्ग में केमिलिडी परिवार से सम्बन्धित है और मरुस्थल के लिए बहुत ही उपयोगी पशु माना जाता है। यह पशु कम आय व अल्प आय वाले किसानों के लिए जीविका अर्जित करने का मुख्य साधन है। ऊँट सामान ढोने, सवारियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने, पानी पहुँचाने तथा खेती के कार्यों के लिए मरु-स्थल में काम आने वाला एक उपयुक्त साधन है।

ऊँटों में प्रजनन काफी धीमी गति से होता है तथा नवजात ऊँटों में मृत्यु दर भी अधिक है। इस कारण हमें वैज्ञानिक तरीकों को अपना कर सृष्टि की इस विशेष देन को न सिर्फ बनाये रखना है बल्कि इसे बढ़ाने में सहयोग देना है।

नर ऊँटों में प्रजनन की जानकारी

1. नर ऊँट जिसे प्रजनन कार्य के लिए उपयोग में लाना है वह अच्छी नस्ल का और शारीरिक रूप से पुष्ट होना चाहिए।

2. ऊँट प्रजनन के लिए 5 से 6 वर्ष की आयु का कम से कम तथा 14-16

वर्ष की आयु का अधिक-से-अधिक होना चाहिए।

3. ऊँट का वजन व शरीर उपयुक्त होना चाहिए। ज्यादा वजन का ऊँट भी मादा ऊँट पर सही तरह से नहीं बैठ सकता है इसलिए शारीरिक गठन का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

4. प्रजनन के चुनाव के समय ऊँट किसी भी रोग से पीड़ित नहीं होना चाहिए जैसे कमरी आदि। क्योंकि ऐसी अवस्था में ऊँट मादा पशु पर सही तरह से बैठ व उतर नहीं सकता है।

5. नर ऊँट में प्रायः देखा गया है कि वह सर्दी में ही 'जूट' में रहता है यानी नवम्बर से मार्च तक और इस दौरान नर पशु की खुराक बहुत कम हो जाती है तथा वजन में भी गिरावट आती है। इस कारण सर्दियों में नर पशु को अधिक पौष्टिक आहार प्रजनन काल में देने की परम्परा है, जैसे गुड़, तेल(तिल्ली का) तथा दाना। दानों में जो पौष्टिक दाना उपलब्ध हो उसकी मात्रा 3 कि० ग्रा० प्रतिदिन तक दे सकते हैं। दाने में हम कुछ दानों का मिश्रण बनाकर भी काम में ले सकते हैं जैसे मोठ, जौ, चना आदि।

6. नर पशु की गर्दन में ग्रन्थि से तरल द्रव का बराबर निकलना तथा मुँह से गुब्बे का निकलना एवं एक विशेष प्रकार की आवाज करना (दाँतों के रगड़ने से होनेवाली) ऊँटों में जूट के दौरान पाये जाने वाले कुछ विशेष लक्षण हैं।

7. प्रजनन के लिए उपयोग में लाये जानेवाले नर पशु के वीर्य की जाँच करा लेनी चाहिए। प्रायः ऐसा देखा गया है कि सर्द ऋतु के बढ़ने के साथ वीर्य की गुणवत्ता बढ़ती है।

8. जिन नर पशुओं को प्रजनन के लिए उपयोग में लाना है उन्हें मादा पशुओं

से अलग रखना चाहिए क्योंकि जूट के दौरान यह अधिक उत्तेजक हो जाते हैं और चोट पहुँचा सकते हैं।

9. एक नर से लगभग 50-60 मादाओं को एक प्रजनन काल में गर्भित करवा सकते हैं।

10. एक नर से एक बार होने वाले वीर्य की मात्रा 8 से 25 मि० ली० तक होती है।

मादा ऊँटों में प्रजनन की जानकारी

1. नर ऊँटों की भाँति मादा ऊँटों (साँडों) में भी अच्छी नस्ल व शारीरिक रूप से पुष्ट होना प्रजनन के लिए आवश्यक है।

2. अधिक वजन की साँडों में भी गर्भधारण व प्रजनन दोनों ही कठिनता से होते हैं। इसलिए साँडों के शरीर की पुष्टता का ध्यान अधिक आवश्यक है।

3. तीन से चार वर्ष की आयु से लेकर 14-15 वर्ष की आयु तक साँड गर्भ-धारण कर बच्चे को जन्म देने में सक्षम होती है।

4. नर ऊँटों की भाँति साँडें सर्दियों में ही गरम होती हैं तथा गर्भधारण की क्षमता रखती हैं।

5. साँडों में स्पष्ट ऋतु चक्र गाय, बकरी की तरह नहीं होता है बल्कि साँड जब तक ग्याबन नहीं होती वह नवम्बर से मार्च तक गर्म होने के सभी लक्षण दिखाती है। मादा ऊँट में 'फोलिक्यूलर साईकल' होती है तथा डिम्ब का स्खलन नर ऊँट से मिलान के बाद लगभग 36 घण्टे में हो जाता है।

6. साधारणतया 2 वर्ष के अंतराल से एक साँड से एक बच्चा प्राप्त होता है। किन्तु यदि साँड को सर्दी प्रारम्भ होते ही (नवम्बर में) गर्भित कर अगले वर्ष दिसम्बर में बच्चा लेकर डेढ़ या दो माह पश्चात् पुनः गर्भित कराया जाय तो 3 वर्षों में 2 बच्चे प्राप्त किये जा सकते हैं।

7. जन्म-दर को बढ़ाने के लिए दूसरा वैज्ञानिक तरीका यह भी है कि 2 से 3 वर्ष की साँडों में हारमोन के टीके लगाकर साँडों को गर्म किया जाए फिर उन्हें गर्भावित कराकर 3.5 वर्ष की आयु में ही बच्चा लिया जा सकता है। वैज्ञानिक विधि से उत्पन्न ऐसे बच्चों को देखा गया है कि वह किसी भी रूप में उन बच्चों से कम नहीं होते जो 4-5 वर्ष की आयु वाली साँडों से जन्मे बच्चे होते हैं।

8. 24 घण्टे के अन्तराल पर एक साँड को उसी नर से दूसरी बार सर्विस दिलाने पर गर्भधारण की सम्भावनाएँ अधिक बढ़ जाती हैं।

9. गर्भित साँडों को अलग रखना चाहिए ताकि किसी दुर्घटना जैसे जानवरों की लड़ाई आदि से बचाया जा सके।

10. दसवें महीने के बाद से गर्भावित साँडों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए जैसे कि उनकी खुराक व वजन की बढ़ोत्तरी, जिसका निरन्तर बढ़ना आवश्यक है।

11. साँडों में गर्भकाल 385 से 390 दिन के बीच पाया गया है अगर गर्भ में बच्चा नर है तो वह प्रायः 385 से 388 दिन के मध्य ब्याती है और अगर गर्भ में बच्चा मादा है तो साँड 390 से 394 दिन के बीच ब्याती है।

12. प्रसव के समय देखा गया है कि साँडों में दूध उतर आता है, प्रजनन अंग शिथिल पड़ जाते हैं तथा प्रजनन अंगों से श्वेत द्रव निकलता है। जानवर बार-बार बैठता व खड़ा होता है। बच्चे के जन्म के साथ ही उसे साँड को सुँघाना चाहिए जिससे साँड बच्चे को अपना कर दूध पिलाये। बच्चे के लिए माँ का यह पहला दूध बहुत जरूरी होता है।

13. साँड की जर का ध्यान रखना चाहिए कि वह 12 घण्टे के अन्दर निकल जाये, न निकलने की स्थिति में पशु चिकित्सक को दिखाकर दवा दिलाना आवश्यक है।

14. बच्चे की नाभि में भी ऐन्टीसेप्टिक दवाई लगवानी चाहिए। हो सके तो विटामिन-ए के टीकों की खुराक लगवा देनी चाहिए। तीन दिन तक 'क्लोरमफेनिकोल' या कोई प्रतिजीवी औषधि दिलाने से बच्चों में मृत्यु-दर को कम किया जा सकता है।

▭ ▭

आलेख

एस. एन. टण्डन

प्रकाशक

परियोजना निदेशक

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़ शिवबाड़ी

बीकानेर

Donated by Dr N D Khanna, Ex. Director
डॉ. एन. डी. खन्ना, भूतपूर्व निदेशक द्वारा दान की गई

आलेख

एस. एन. टण्डन